P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9* May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारत में खाद्यान्नों की राज्यवार स्थिति का एक विश्लेषण

सारांश

भारत में खाद्य सुरक्षा की स्थिति के लिए खाद्यान्नों की आपूर्ति एवं वितरण अर्थात् खाद्यान्नों का पूर्ति पक्ष एव मांग पक्ष दोनो ही अत्यन्त महत्वपूर्ण है परन्तु सैद्धान्तिक रूप से खाद्य सुरक्षा की आवश्यक शर्त के रूप में आपूर्ति पक्ष का महत्व अपेक्षाकृत अधिक है। इस निमित्त भारत में खाद्यान्नों की राज्यवार स्थिति का अध्ययन इस शोध पत्र में क्रमशः प्रस्तावना, खाद्य सुरक्षा हेतु खाद्यान्न उत्पादन की आवश्यकता, खाद्यान्नों की राज्यवार स्थिति, चावल तथा गेहूँ के उत्पादन में राज्यवार स्थिति के साथ अन्त में निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द : खाद्य सुरक्षा, मानवीय पूंजी, स्वउत्पादन, गहन कृषि तकनीकी, भौतिक तथा आर्थिक सुलभता आदि।

विनयानन्द यादव
शोध छात्र,
अर्थशास्त्र विभाग,
दी0द0उ0 गोरखपुर
विश्वविद्यालय,
गोरखपुर,उ0प्र0, भारत

आलोक कुमार गोयल
प्रोफेसर,
अर्थशास्त्र विभाग,
दी0द0उ0 गोरखपुर
विश्वविद्यालय,
गोरखपुर, उ0प्र0, भारत

प्रस्तावना

किसी भी देश के आर्थिक विकास के लिए पूँजी एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण कारक है जिसे भौतिक पूँजी तथा मानवीय पूँजी में विभाजित किया जा सकता है। मानवीय पूँजी के उन्नयन के लिए खाद्यान्न सुरक्षा एक आवश्यक शर्त है। खाद्य सुरक्षा एक व्यापक अवधारणा है जो प्रारम्भिक या शुरूआती दौर में सभी के लिए भोजन की गुणवत्ता की उपलब्धता से सम्बन्धित है जिससे लोगों को खाद्यान्नों के साथ दाल, दूध, सब्जी आदि उपलब्ध हो सके। खाद्य सुरक्षा की व्यापक परिभाषा सन् 1996 में विश्व खाद्य सम्मेलन रोम में दी गयी के अनुसार, ''खाद्य सुरक्षा का आशय व्यक्तिगत स्तर से घरेलू स्तर तक क्षेत्रीय, राष्ट्रीय व विश्व स्तर पर प्रत्येक समय भोजन की भौतिक एवं आर्थिक सुलभता इसके साथ ही गुणात्मक भोजन को चुनने की स्वतंत्रता ताकि व्यक्ति का सक्रिय एवं स्वस्थ्य जीवन सुनिश्चित हो।'' अर्थात् खाद्य सुरक्षा का अर्थ सभी लोगों को सदैव भोजन की उपलब्धता और उसे प्राप्त करने की पर्याप्त क्रय शक्ति क्षमता से है। इसका मतलब सभी लोगों के पास पर्याप्त भोजन उपलब्ध हो सभी लोग खाद्य पदार्थ खरीद पाने की क्षमता रखते हो तथा खाद्य की उपलब्धता दीर्घ काल तक सुनिश्चित हो।

अध्ययन का उद्देश्य

खाद्य सुरक्षा हेतु खाद्यान्नों के उत्पादन में राज्यों की हिस्सेदारी का अध्ययन तथा समय के साथ संगत राज्यों की हिस्सेदारी की स्थिति में परिवर्तन का अध्ययन करना है।

खाद्य सुरक्षा हेतु खाद्यान्न उत्पादन की आवश्यकता

भारत एक संघशासित देश है जिसके अन्तर्गत 29 राज्य तथा 7 केन्द्र शासित प्रदेश समाहित है। भारत में खाद्य सुरक्षा की स्थिति के लिए यह आवश्यक है कि देश के प्रत्येक राज्य एवं केन्द्र शासित प्रदेश के संपूर्ण जनसंख्या को पर्याप्त मात्रा में खाद्यान्न उपलब्ध हो देश के अधिकांश राज्य कृषि प्रधान राज्य है जहां पर खाद्यान्नों कै उत्पादन की विशिष्टता अलग–अलग है। देश के राज्यों की न केवल भौगोलिक पृष्ठभूमि अलग है बल्कि सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक एवं संस्थागत व्यवस्था भी भिन्न–भिन्न है। जिससे देश के कुछ राज्यों में खाद्यान्नों का उत्पादकता अपेक्षाकृत अधिक है। प्रायः इसमें वे राज्य सम्मिलित है जिसमें किसानों की आर्थिक स्थिति बेहतर है और जो उन्नति तकनीकि जिसे गहन कृषि तकनीकी के रूप में जाना जाता है, के प्रति जागरूप ही नहीं बल्कि क्रियान्वयन भी कर रहे है। जबकि देश के कुछ पिछड़े राज्य जिनकी आर्थिक और सामाजिक पृष्ठभूमि उन्नतिशील तकनीकी के प्रयोग के अनुकूल नहीं है उन राज्यों में कृषि का उत्पादन एवं उत्पादकता अपेक्षाकृत कम है। अर्थात् ऐसे राज्यों में खाद्य सुरक्षा के खाद्यान्नों का आपूर्ति पक्ष का स्वउत्पादन सामर्थ्य कमजोर है। ऐसे राज्यों में खाद्यान्नों की आपूर्ति पर्याप्त मात्रा में करने के लिए राज्य व्यापार एवं केन्द्र सरकार के केन्द्रीय भण्डारगृह से खाद्यान्नों की आपूर्ति करना आवश्यक हो जाता है। कृषि की उत्पादकता एवं उत्पादन की दृष्टि से पिछड़े हुए राज्यों में जनसंख्या वृद्धि दर अपेक्षाकृत अधिक है। अर्थात् जनसंख्या का आकार तेजी से बढ़ रहा है। परिणामतः गरीबी की निरपेक्ष संख्या में कमी नहीं आ पा रही है बल्कि कुछ राज्यों में निरपेक्ष संख्या बढ़ी है। यह जनसंख्या का वह हिस्सा है जिसमें क्रय शक्ति कम होती है जो ऊर्जा की आवश्यक मात्रा स्वयं से प्राप्त नहीं कर पाते इसलिए आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9* May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

एक लक्षित वर्ग होता है।

खाद्यान्न की राज्यवार स्थिति

देश के विभिन्न राज्यों में खाद्यान्नों की उपलब्धता की स्थिति का अध्ययन करना अत्यन्त आवश्यक है ताकि विभिन्न राज्यों में खाद्य सुरक्षा के लिए आवश्यक खाद्यान्न की आवश्यकता का अनुमान लगाया जा सके। खाद्यान्नों के अन्तर्गत मुख्य रूप से कृषि उत्पादन से संबंधित मुख्य फसल के रूप में गेहूँ एवं चावल है जबकि मोटे अनाज में ज्वार, बाजरा एवं मक्का को शामिल किया जाता है, ये सभी मानवीय ऊर्जा के लिए अत्यन्त आवश्यक है साथ ही साथ सामान्य जनता के लिए प्रोटीन का सबसे अच्छा स्रोत दालें होती है। इसलिए यह जानना आवश्यक है कि देश के विभिन्न राज्यों में गेहूँ, चावल, मोटे अनाज–जवार, बाजरा, मक्का तथा दालों के उत्पादन की स्थिति किस प्रकार की है।

तालिका 01: खाद्यान्न : प्रमुख राज्यों की क्षेत्र, उत्पादन एवं उत्पादकता, 2005–06

राज्य	क्षेत्र (मिलियन हेक्टेयर में)	सम्पूर्ण भारत में प्रतिशत (क्षेत्र में)	उत्पादन (मिलियन टन में)	सम्पूर्ण भारत में प्रतिशत (उत्पादन में)	उत्पादकता (किग्रा हेक्टेयर में)
उत्तर प्रदेश	19.64	16.15	40.41	19.37	2057
पंजाब	6.32	5.2	25.18	12.07	3986
आंध्रप्रदेश	7.17	5.9	16.95	8.13	2365
पश्चिम बंगाल	6.44	5.3	15.61	7.48	2423
हरियाणा	4.27	3.51	13	6.23	3045
राजस्थान	12.45	10.24	11.45	5.49	919
मध्यप्रदेश	11.68	9.61	13.2	6.33	1130
महाराष्ट्र	12.75	10.49	12.09	5.8	948
बिहार	6.55	5.39	8.59	4.12	1311
कर्नाटक	7.6	6.25	13.49	6.47	1776
तमिलनाडु	3.32	2.73	6.13	2.94	1847
उड़ीसा	5.46	4.49	7.36	3.53	1349
गुजरात	3.97	3.26	6.15	2.95	1551
छत्तीसगढ़	5.15	4.24	5.71	2.74	1111
झारखण्ड	1.93	1.59	2.07	0.99	1073
असम	2.6	2.14	3.68	1.76	1416
उत्तराखण्ड	1.03	0.85	1.59	0.76	1548
अन्य	3.27	2.69	5.94	2.85	@
भारत	121.6	100.01	200.6	100	1715

स्रोतः एग्रीकल्चर स्टेटिसटिक्स एट ए ग्लान्स, 2016

चित्र – 1

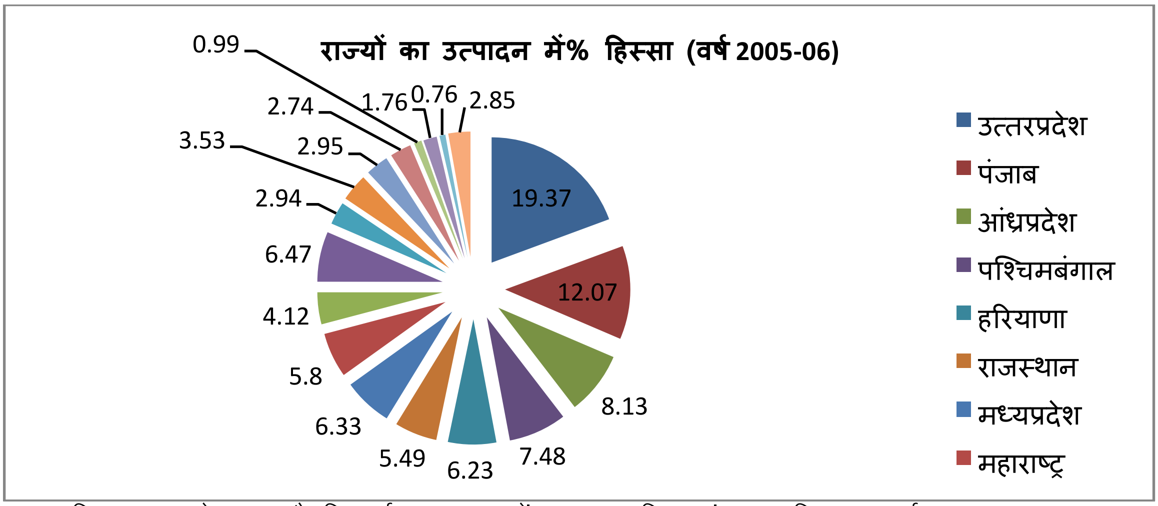

तालिका 01 से स्पष्ट है कि वर्ष 2005–06 में खाद्यान्न के क्षेत्र विस्तार में उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, मध्यप्रदेश तथा पूर्वोत्तर भारत में असम अग्रणी राज्य है। खाद्यान्न उत्पादन में क्रमशः उत्तर प्रदेश, पंजाब, आंध्रप्रदेश, पश्चिम बंगाल, हरियाणा, कर्नाटक, महाराष्ट्र तथा राजस्थान प्रमुख राज्य हैं। पंजाब, हरियाणा, पश्चिम बंगाल, आंध्रप्रदेश, उत्तरप्रदेश तथा तमिलनाडु की उत्पादकता देश की औसत उत्पादकता 1715 किग्रा/हेक्टेयर से अधिक है। उत्तर

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9* May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

प्रदेश, पंजाब, आन्ध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल, हरियाणा, कर्नाटक तथा तमिलनाडु राज्यों की सम्पूर्ण भारत में उत्पादन में हिस्सेदारी क्षेत्र में हिस्सेदारी से अधिक है। जबकि शेष राज्यों की उत्पादन में हिस्सेदारी क्षेत्र में हिस्सेदारी से कम है।

तालिका 02 : खाद्यान्न : प्रमुख राज्यों की क्षेत्र, उत्पादन एवं उत्पादकता, 2015–16

राज्य	क्षेत्र (मिलियन हेक्टेयर में)	सम्पूर्ण भारत में प्रतिशत (क्षेत्र में)	उत्पादन (मिलियन टन में)	सम्पूर्ण भारत में प्रतिशत (उत्पादन में)	उत्पादकता (किग्रा हेक्टेयर में)
उत्तर प्रदेश	19.32	15.75	44.01	17.45	2278
पंजाब	15.62	12.73	30.21	11.98	1935
आंध्रप्रदेश	6.65	5.42	28.41	11.26	4273
पश्चिम बंगाल	12.99	10.59	18.1	7.18	1393
हरियाणा	6.39	5.21	17.78	7.05	2783
राजस्थान	4.47	3.64	16.38	6.5	3665
मध्यप्रदेश	6.6	5.38	14.1	5.59	2135
महाराष्ट्र	3.86	3.15	11.94	4.73	3090
बिहार	4.14	3.37	10.57	4.19	2555
कर्नाटक	7.16	5.84	9.97	3.95	1393
तमिलनाडु	10.12	8.25	8.07	3.2	797
उड़ीसा	4.99	4.07	6.96	2.76	1395
गुजरात	5.37	4.38	6.59	2.61	1226
छत्तीसगढ़	3.16	2.58	6.23	2.47	1973
झारखण्ड	2.68	2.19	5.35	2.12	1995
असम	2.19	1.78	5.03	1.99	2300
उत्तराखण्ड	2.65	2.16	4.09	1.62	1544
अन्य	0.88	0.72	1.73	0.68	1967
भारत	3.42	2.79	6.71	2.66	@
उत्तर प्रदेश	122.65	100	252.22	100	2056

स्रोतः एग्रीकल्चर स्टेटिसटिक्स एट ए ग्लान्स, 2016

चित्र – 2

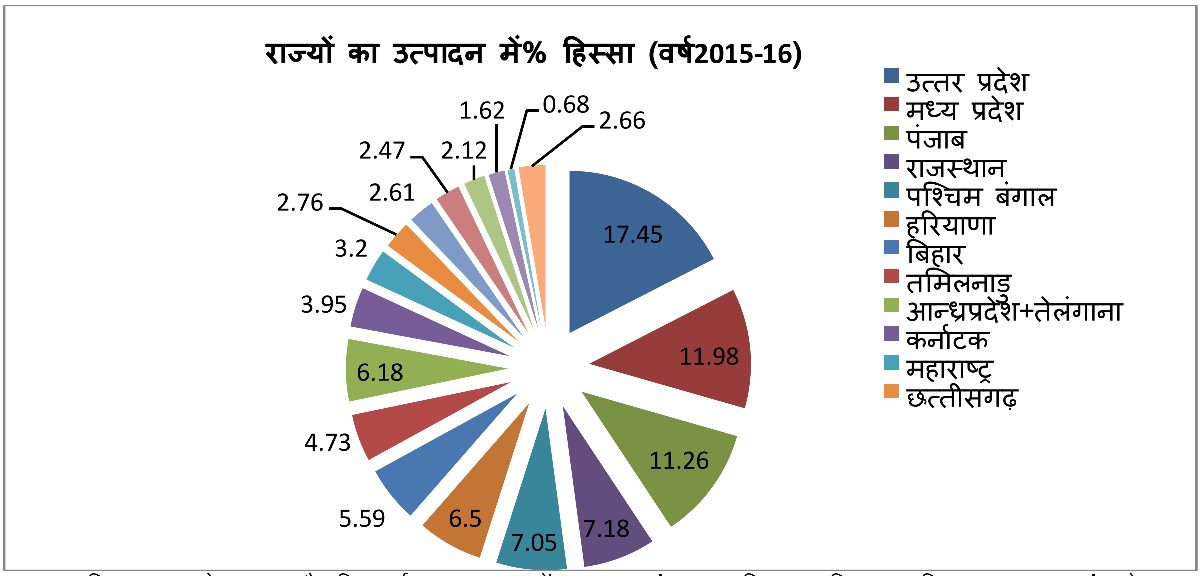

तलिका 02 से स्पष्ट है कि वर्ष 2015–16 में खाद्यान्न के क्षेत्र विस्तार में उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, पंजाब, बिहार, पश्चिम बंगाल तथा पूर्वोत्तर भारत में असम अग्रणी राज्य है। खाद्यान्न उत्पादन में क्रमशः उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, पंजाब, राजस्थान, पश्चिम बंगाल, हरियाणा, बिहार, तमिलनाडु तथा आंध्रप्रदेश प्रमुख राज्य हैं। देश की औसत खाद्यान्न उत्पादकता 2056 किग्रा/हे0 से अधिक उत्पादकता वाले राज्य क्रमशः पंजाब, हरियाणा, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, उत्तर प्रदेश तथा बिहार है। सम्पूर्ण भारत के उत्तर प्रदेश,

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9* May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र तथा झारखण्ड राज्यो की उत्पादन में भागीदारी क्षेत्र में भागीदारी से अधिक है, जबकि शेष भारत के राज्यों की क्षेत्र में भागीदारी उत्पादन से ज्यादा है।

उपरोक्त दोनों तालिकाओं एवं चित्रों की तुलना से स्पष्ट है कि जहाँ 2005–06 में खाद्यान्नों का क्षेत्र विस्तार 121.6 मिलियन हेक्टेयर, उत्पादन 200.6 मिलियन टन तथा औसत उत्पादकता 1715 किग्रा/हे0 थी जो 2015–16 में बढ़कर क्रमशः क्षेत्र विस्तार 122.65 मिलियन हेक्टेयर, उत्पादन 252.22 मिलियन टन तथा उत्पादकता 2056 किग्रा/हे0 हो गयी। इस दौरान खाद्यान्न के क्षेत्र विस्तार में वृद्धि मध्यप्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, पंजाब, बिहार, तमिलनाडु तथा झारखण्ड राज्यों में हुई। उत्पादन में क्रमशः उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश, बिहार, तमिलनाडु, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, असम तथा उत्तराखण्ड राज्यों में वृद्धि हुई। महाराष्ट्र, कर्नाटक एवं उड़ीसा को छोड़कर लगभग सभी राज्यों में खाद्यान्न की उत्पादकता में वृद्धि हुई है। खाद्यान्नों के उत्पादन में सर्वाधिक हिस्सेदारी उत्तर प्रदेश की लगातार बनी हुई है, जबकि दूसरे स्थान पर पंजाब की जगह मध्य प्रदेश ने ले ली है, तीसरे स्थान पर पंजाब तथा चौथे स्थान पर राजस्थान स्थापित हुआ है।

चावल तथा गेहूँ के उत्पादन में राज्यवार स्थिति

तालिका 03– चावल तथा गेहूँ के उत्पादन में प्रतिशत हिस्सा (2005–06 एवं 2015–16)

चावल के उत्पादन में % हिस्सा				गेंहू के उत्पादन में % हिस्सा		
राज्य	वर्ष 2005-06	वर्ष 2015-16		राज्य	वर्ष 2005-06	वर्ष 2015-16
पश्चिमबंगाल	15.81	15.1		उत्तरप्रदेश	34.71	28.74
आंध्रप्रदेश	12.75	10.04		पंजाब	20.89	17.2
उत्तरप्रदेश	12.13	11.99		हरियाणा	12.78	12.14
पंजाब	11.1	11.33		मध्यप्रदेश	8.59	18.92
ओडिसा	7.47	5.63		राजस्थान	8.46	10.56
तमिलनाडु	5.69	7.65		बिहार	4.67	5.08
छत्तीसगढ़	5.46	5.84		गुजरात	3.56	2.66
बिहार	3.81	6.22		महाराष्ट्र	1.87	0.81
कर्नाटक	6.25	2.59		उत्तराखंड	0.94	0.81
हरियाणा	3.5	3.97		पश्चिमबंगाल	1.11	1.03
झारखंड	1.7	2.76		हिमांचलप्रदेश	0.98	0.73
असम	3.87	4.93		जम्मू-कश्मीर	0.63	0.53
महाराष्ट्र	2.94	2.52		कर्नाटक	0.32	0.19
गुजरात	1.42	1.6		झारखंड	0.12	0.29
मध्यप्रदेश	1.81	3.43		असम	0.07	0.04
केरल	0.69	0.53		अन्य	0.29	0.27
अन्य	3.62	3.87				

स्रोतः एग्रीकल्चर स्टेटिसटिक्स एट ए ग्लान्स, 2016

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9* May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

चित्र– 3

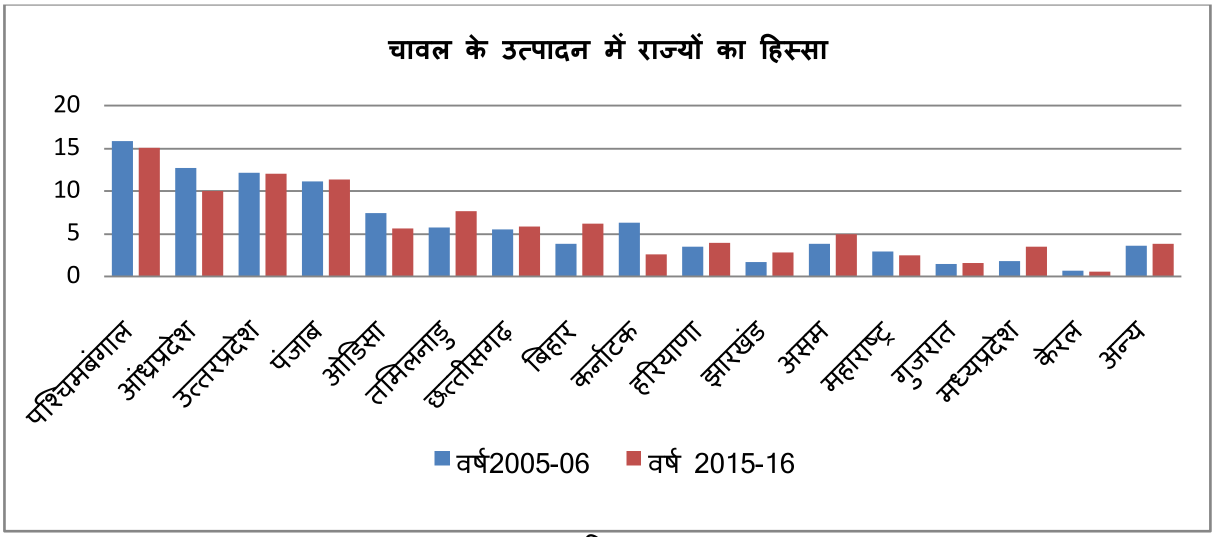

चित्र– 4

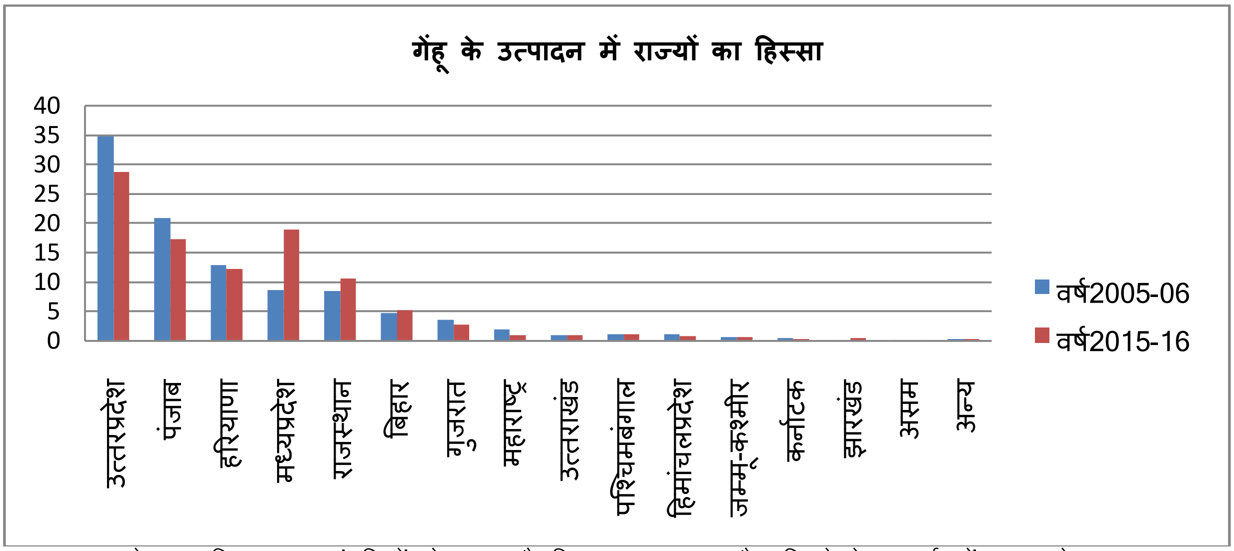

उपरोक्त तालिका–03 एवं चित्रों से स्पष्ट है कि वर्ष 2005–06 में चावल के उत्पादन में क्रमशः पश्चिम बंगाल, आंध्रप्रदेश, उत्तर प्रदेश, पंजाब, उड़ीसा, कर्नाटक, तमिलनाडु तथा छत्तीसगढ़, जबकि 2015–16 में पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, पंजाब, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, तथा बिहार क्रमशः सर्वाधिक भागीदारी वाले राज्य है। गेहूँ के उत्पादन में अग्रणी राज्य वर्ष 2005–06 में क्रमशः उत्तर प्रदेश पंजाब, आन्ध्रप्रदेश, पश्चिम बंगाल, हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश तथा महाराष्ट्र थे जबकि 2015–16 में सर्वाधिक हिस्सेदारी वाले राज्य क्रमशः उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, बिहार तथा पश्चिम बंगाल है।

साहित्यावलोकन

रमेश चन्द, पी0 ए0 लक्ष्मी प्रसन्ना, अरुणा सिंह (2011): इनके EPW में प्रकाशित लेख “Farm size and productivity : Understanding the strengths of Smallholders and Improving their Livelhoods” जिसका उद्देश्य भारत में प्रति हेक्टेयर कृषि उत्पादकता और जोत के आकार के बीच विपरीत सम्बन्धों का विश्लेषण करना है जो मुख्यतः द्वितीय आकड़ों पर आधारित है। अपने अध्ययन में इन्होंने पाया कि जैसे–जैसे भू–जोतों का आकार घटता जाता है प्रति हेक्टेअर उर्वरकों का प्रयोग बढ़ता जाता है तथा सिंचाई के अन्तर्गत आने वाले क्षेत्रफल भी कृषि जोतों के क्षेत्रफल के प्रतिशत के रूप में सीमान्त भूमियों पर अधिक है इसके अतिरिक्त फसल गहनता जो भारत में कृषि की संवृद्धि का प्रमुख स्रोत है भी सीमान्त भूमियों पर उच्चतम है और जैसे–जैसे जोतों के आकार में वृद्धि होती जाती है इसमें गिरावट आती है इस प्रकार इससे ज्ञात होता है कि भूमि असमानता में कमी सीमान्त किसानों के पक्ष की ओर हो तो भारतीय कृषि की उत्पादकता में महत्वपूर्ण वृद्धि होगी। जबकि दूसरा निष्कर्ष है कि सीमान्त भूमि तो उत्पादन के दृष्टिकोण से तो अच्छी है परन्तु पर्याप्त आय उत्पन्न करने के लिए तथा जीविका निर्वहन के लिए अपर्याप्त है। 0.8 हेक्टेअर से कम सीमान्त भूमि उच्च उत्पादकता के बावजूद एक कृषि परिवार को गरीबी से बाहर निकालने में पर्याप्त आय सृजन नहीं करती है भारत में लगभग तीन–चौथाई सीमान्त किसान यदि वे गैर–कृषि स्रोतों से आय प्राप्त नहीं करते तो गरीबी के अन्तर्गत आयेंगे। इसलिए इनकी आय और जीविका बढ़ाने के उपाय हैं कि सीमान्त किसानों को कृषि आय के पूरक के रूप में अपने निवास स्थान के आस–पास वैकल्पिक रोजगार प्रदान किया जाय।

जगपाल सिंह मलिक (2017) : जगपाल सिंह मलिक ने कुरुक्षेत्र में प्रकाशित अपने लेख ''कैसे बढ़ेगा खाद्यान्न उत्पादन : कुछ सुझाव'' में बताया कि कृषि को विकसित करने के लिए नवीनतम तकनीक के प्रयोग करने की सख्त जरूरत है, क्योंकि कृषि की रीढ़ माने जाने वाले प्राकृतिक संसाधनों जैसे मृदा, जल और वायु की मात्रा और गुणवत्ता में लगातार गिरावट होती जा रही है। देश की तेजी से बढ़ती जनसंख्या के लिए खाद्यान्न की आत्मनिर्भरता सुनिश्चित करना नितान्त आवश्यक है। अतः भविष्य में खाद्यान्न आपूर्ति के लिए असरदार कार्य व्यापक तौर पर करने की आवश्यकता है। इसके लिए कृषि शोध पर जोर देना होगा, जिससे भारत में उच्च कोटि का कृषि अनुसंधान, कृषि प्रसार व कृषि शिक्षा का ढाँचा स्थापित किया जा सके।

इस आधार पर यह जानना आवश्यक है कि भारत में खाद्य सुरक्षा के लिए खाद्यान्नों के उत्पादन एवं उत्पादकता तथा क्षेत्र में राज्यवार स्थिति किस प्रकार की है। इसी को दृष्टिगत रखते हुए राज्यों का प्रमुख खाद्य उत्पादों का हिस्सा एवं स्थिति में परिवर्तन का विश्लेषण अत्यन्त प्रासंगिक लगता है।

निष्कर्ष

भारत में खाद्यान्नों के उत्पादन में सर्वाधिक हिस्सेदारी उत्तर प्रदेश की लगातार बनी हुई है, जबकि दूसरे स्थान पर पंजाब की जगह मध्य प्रदेश ने ले ली है, तीसरे स्थान पर आन्ध्रप्रदेश की जगह पंजाब, ठीक इसी प्रकार पश्चिम बंगाल के स्थान पर राजस्थान स्थापित हुआ है। चावल के उत्पादन में हिस्सेदारी पश्चिम बंगाल की सर्वाधिक है परन्तु 2005–06 की तुलना में 2015–16 में कम हुई है। आन्ध्रप्रदेश का हिस्सा घटा है जिससे वह दूसरे स्थान से तीसरे स्थान पर आया है जबकि उत्तर प्रदेश की उत्पादन में हिस्सेदारी घटने के बावजूद तीसरे स्थान से दूसरे स्थान को प्राप्त किया है। इसी प्रकार गेहूँ के उत्पादन में 2005–06 में सर्वाधिक हिस्सेदारी क्रमशः उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा और मध्यप्रदेश की रही है तथा 2015–16 में सर्वाधिक हिस्सेदारी वाले राज्य क्रमशः उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, पंजाब और हरियाणा है। राज्यो की हिस्सेदारी में उल्लेखनीय वृद्धि 2005–06 की तुलना में 2015–16 में मध्य प्रदेश की रही है। जिसका कारण गेहूँ से आच्छादित क्षेत्र की अपेक्षा उत्पादकता में अत्यधिक वृद्धि का रहा है। इस प्रकार समय के साथ खाद्यान्नों के उत्पादन में राज्यों की स्थिति में परिवर्तन हुआ है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

अरूण, ए0के0 (2012) : बाजार की गिरफ्त में पोषाहार और स्वास्थ्य (योजना 2012, पेज–19–22)

बनर्जी नंदू (2013), गरीबों के पेट पर वोटों की राजनीति (नई दुनिया समाचार–पत्र 25 जुलाई 2013, पेज नं0–8)

भास्कर सुरेन्द्र (2013) : आधारभूत सुविधाओं का आधार प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (योजना फरवरी 2013, पेज–38–39)

चन्द्रभान (2012) : अनाज का एक–एक दाना महत्वपूर्ण (कुरूक्षेत्र मार्च 2012, पेज–16–18)

डॉ0 कोचर नवीन व झरिया मणिकांत (2012) : भविष्य के लिए अत्यन्त आवश्यक खाद्य सुरक्षा (कुरूक्षेत्र मार्च 2012, पेज–23–28)

प्रो0 मोदी के0एम0 (2012) : खाद्य सुरक्षा : चुनौतियां और समाधान (कुरूक्षेत्र मार्च, 2012 पेज–13–17)

पाणि नरेन्द्र (2013) : खाद्य हेतु नगद सब्सिडी संरचना की भ्रांतियाँ (योजना फरवरी 2013, पेज–19–21)

डॉ0 रावत, गजेन्द्र (2012) : खाद्य सुरक्षा एवं सरकारी प्रयास (कुरूक्षेत्र मार्च 2012, पेज–18–24)

रावत यशवंत (2012) : खाद्यान्न सुरक्षा के लिए जैविक खेती जरूरी (कुरूक्षेत्र मार्च 2012, पेज–23–28)

स्टैडिंग गार्ड (2013) : नगद सुधार की राजनीति (योजना फरवरी 2013, पेज–16–18)

डॉ0 सावंत अनिता (2013) : भोजन की बर्बादी से पहले सोचे (नवभारत, रविवार 02 जुन 2013, पेज–1–4

यादव साधना (2012) : खाद्य सुरक्षा बिल से खत्म होगा कुपोषण (कुरूक्षेत्र मार्च 2012, पेज–3–7)

दत्त, रूद्र एवं के0पी0एम0 सुन्दरम : भारतीय अर्थव्यवस्था, एस0 चन्द एण्ड कम्पनी लि0, नई दिल्ली 2008

मुआर, रविशंकर : भारत को पंचवर्षीय योजना और निर्धनता निवारण, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली 2003

कलवार, सुगमचन्द, मीना तेजराम, निर्धनता उन्मूलन एवं ग्रामीण विकास, पोइन्टर पब्लिशर्स जयपुर, 2001

सेन, 31 मार्च एवं ज्याद्रेज, भारत विकास की दिशाएं अनुवाद भवानी शंकर बागला, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली जनवरी 2000

दास संदीप, सार्वजनिक वितरण प्रणाली व्यवस्था जरूरत पुनर्गठन की, योजना अक्टूबर, 2010

गरीबी उन्मूलन और खाद्य सुरक्षा, योजना अक्टूबर, 2010

सुमन, अनुपम कुमार : गरीब भारत की भावी चुनौतियाँ, कुरूक्षेत्र, वर्ष 46, दिसम्बर, 2000

स्वामीनाथन एम0एस0 : अचीविंग द गोल ऑफ फूड सिक्योरिटी एण्ड न्यूट्रीशन फार ऑल, एन0एफ0आई0 बुलेटिन, वाल्यूम 36 नं0 1, जनवरी, 2015

मुखर्जी संजीव : फूड सिक्योरिटी इण्डियाज स्ट्राक होल्डिंग एण्ड सब्सिडी स्टैंड एट डब्लू0टी0ओ0, बिजनेस स्टैर्डड, नई दिल्ली, 15 दिसम्बर, 2017

पुरी राघव : इण्डियाज नेशनल फूड सिक्योरिटी एक्ट (एन0एफ0एस0ए0) अर्ली एक्सपीरीयन्स, लान्सा (LANSA) वर्किंग पेपर सिरीज, वाल्यूम 2017, जून, 2017

सेनगुप्ता प्रियम एण्ड मुखोपाध्याय काकली : इकोनामिक एण्ड इनवायरमेंट इम्पैक्ट ऑफ नेशनल फूड सिक्योरिटी एक्ट ऑफ इण्डिया, एग्रीकल्चरल एण्ड फूड इकोनामिक्स, 25 फरवरी, 2016

कुमार वी0 बीजू : इकोनामिक रिफार्म एण्ड फूड सिक्योरिटी रेसनल फॉर स्टेट इंटरवेंशन, द नेहू जर्नल वाल्यूम (XV, No. 2) जुलाई–दिसम्बर, 2017

कुमार वीरेन्द्र : खाद्य एवं पोषण सुरक्षा में वैद्यानिक क्रान्तियाँ, विज्ञान प्रगति, अक्टूबर, 2017

आर्थिक समीक्षा, 2017–18

नदकर्नी एम0वी0 : क्राइसिस इन इण्डियन एग्रीकल्चर, ई0पी0डब्ल्यू0, वाल्यूम 53, इश्यू नं0 17, 28 अप्रैल, 2018

आलम वसी, पॉल रंजीत के, आर्या प्रवीण एवं जैन ऊषा : स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में चावल के उत्पादक की स्थिति एवं पूर्वानुमान, सांख्यिकी विमर्श (भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान) अंक–13, वर्ष 2017–18

सूद सुरिंदर : इवरग्रीन रिवॉल्यूशन, कुरूक्षेत्र, फरवरी, 2018, पेज 12–15